॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे ब्रह्म! मैं तेरी शरण में आया हूँ और जहाँ भी मैं जाता हूँ वहाँ तुझे ही दृष्टिपात करता हूँ। प्राची दिक् में, पूर्व में अग्नि का प्रावधान हो रहा है और दक्षिण में इन्द्र बन करके रहते हो और प्रतीची दिक् में वरुण बन करके रहते हो उदीची दिक् में सोम बन करके रहते हो, ज्ञान के भण्डार हो, ध्रुवा में पालन करने वाले विष्णु हो और ऊर्ध्वा में पालन करने वाला बृहस्पति कहलाता है। वह प्रभु! की उपासना करता है प्रातः काल कहता है कि प्रभु पाप करने के लिए कहाँ जाऊँ और मेरे द्वारा पाप क्यों हों? हे प्रभु! मुझे इतनी शक्ति प्रदान करो कि मैं पूर्व में अग्नि के तुल्य तेज को दृष्टिपात करता रहूँ, मैं दक्षिण में इन्द्र को दृष्टिपात करता रहूँ। और अन्न का जो भण्डार है जो मानव को वृत्त बनाता है। हे प्रभु! प्रतीची में तुम वरुण बन करके रहते हो और वह वरुण ही मेरे जीवन की सार्थकता है इसी प्रकार उदीची में सोम बन करके रहते हों। सोम किसे कहते हैं? ज्ञान को सोम कहते हैं, विज्ञान को सोम कहते है। विवेक को सोम कहते हैं, वह धारण होने वाला सोम है। योगीजन इसी सोम को पान करते हुए ज्ञान और विवेक से सने हुए अमृत को प्राप्त करते हैं तो उनकी वाणी में सोमपन आ जाता है। प्रभु! आप ध्रुवा में पालन करने वाले विष्णु बन करके रहते हो, आज हम सबकी पालना करने वाले हो और ऊर्ध्वा में प्रभु! आप बृहस्पति बन करके मेरे जीवन के रक्षक बनते हो, क्योंकि रक्षा विद्या और विवेक से होती है। ज्ञानी ही संसार में महान् कहलाता हैं और उसका नेतृत्व करने वाला बृहस्पति कहलाता है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 569 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 644
वर्ष : 48 44 समग्र वर्ष : 54

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. महर्षि भारद्वाज का विज्ञान	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-21
4. महर्षि सम्भूति ऋषि द्वारा तप की विवेचना	पूज्यपाद-गुरुदेव	22-37
5. दो प्रकार का ज्ञान	पूज्यपाद-गुरुदेव	38
6. ऋषियों के उद्‌गार		39
7. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		40-42

चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायाग

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से एवम् पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (पूर्व शृङ्गी ऋषि जी) के शुभ आशीर्वाद से प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायाग का आयोजन लाक्षागृह बरनावा में श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय के प्रांगण में दिनाँक 1 मार्च, 2020 से 8 मार्च, 2020 तक बड़े हर्ष एवम् उल्लास के साथ आयोजित किया जा रहा है जिसमें आप सब अपने सम्बन्धियों व मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

श्री गाँधी धाम समिति (पञ्जी.)

॥ ओ३म् ॥

महर्षि भारद्वाज का विज्ञान

जीते रहो!

देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गए हैं और जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है, उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वे परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं। क्योंकि **ये संसार दो प्रकार का माना गया है**–एक जड़वत है तो द्वितीय चैतन्य है। परन्तु वे परमपिता परमात्मा दोनों प्रकार के जगत में निहित रहते हैं। **चेतना के मूल में ज्ञान और प्रयत्न है।** और जितना भी ये जगत ये पिण्ड रूप में चाहे गतिवान भी हो, कहीं तो यदि ज्ञान और प्रयत्न नहीं हैं तो वो चेतना से रहित है, वह संसार जड़वत माना गया है। इसीलिए हमारे यहाँ उस परमपिता परमात्मा की जो महती है वह अनन्तमयी है। इसीलिए प्रत्येक वेद मन्त्रः उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है, जिस प्रकार माता का पुत्रः माता की गाथा गा रहा है, उस प्रकार ये पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है। क्योंकि जब प्रत्येक वेद मन्त्र के हम गर्भ में प्रवेश करते हैं तो प्रायः प्रत्येक वेद मन्त्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गाता रहता है अथवा उसके गुणों का वर्णन करता रहता है।

वसुन्धरा की विवेचना

मुनिवरों! इसीलिए हमारे यहाँ वेद मन्त्रों में उस परमपिता परमात्मा को

वसुन्धरा के रूप में वर्णित किया गया है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा वसुन्धरा के रूप में हैं व सर्वत्र ब्रह्माण्ड उसी में वशीभूत रहता है। जिस प्रकार माता के गर्भस्थल में मानो ये शिशु पनपता रहता है और माता अपने में उसे धारण कर रही है अथवा उसे बसा रही है। इसीलिए उसको वसुन्धरा के रूप में वर्णित किया गया है। मानो वे मेरी प्यारी माता अपने में बसा रही है। कैसा उस प्रभु का विज्ञान है। इसीलिए हमारे यहाँ परमपिता परमात्मा को विज्ञानवेत्ता कहते हैं। मेरे प्यारे! वो महिमावादी हैं। मेरे पुत्रों! देखो जब हम जैसे पुत्र माता के गर्भस्थल में निहित होते हैं। तो मानो जैसे बिन्दु, बिन्दु में एक शिशु है और शिशु जब माता के गर्भस्थल में प्रवेश हो जाता है तो मानो सर्वत्र देवता उसकी रक्षा करने के लिए तत्पर हो जाते हैं। मेरे पुत्रों! **देवाम् भूतम् ब्रह्मणम् देवाः**। वह जो देवताजन् हैं, वो माता के गर्भस्थल में शिशु की रक्षा कर रहे हैं। मुनिवरों! देखो, वह जो चन्द्रमा वह हमें अमृत दे रहा है। सूर्य प्रकाश दे रहा है और अग्नि उष्ण बना रही है और मुनिवरों! वह जो आपो है वही उस स्थली में मानो देखो **एकतम् ब्रह्माः वर्णम् ब्रव्हे क्रतम्।** वही माता के गर्भस्थल में मेरे पुत्रों! देखो, आपो ही ओढ़न है, आपो ही आसन बना हुआ है और आसन ही मानो उसके पासे हैं। वह जलों में निहित रहने वाला शिशु है जो आपो में बेटा! आपोवर्णित बन रहा है। परन्तु इसी प्रकार **आपाम् देवत्वाम् लोकाम् हिरण्यम् वृथाः**। मुनिवरों! देखो वह देवता है और वह अग्नि मुनिवरों! देखो जब उष्ण बनाती रहती है। और देखो वायु गति दे रहा है, वह प्राण दे रहा है। और मुनिवरों! ये अमृतम् गुरुत्व देने वाली पृथ्वी है और ये अन्तरिक्ष उसे अवकाश दे रहा है। वाह रे मेरे प्रभु! तू कितना विज्ञानवेत्ता है। जब तेरे विज्ञान की विवेचना करना प्रारम्भ हम करते हैं तो मानो एक-एक वाक्य तेरा विज्ञान में निहित रहता है। मेरी भोली माता को ये ज्ञान नहीं है कौन निर्माण कर रहा है, कौन निर्माणवेत्ता है। मेरे पुत्रों! देखो सर्वत्र देवता उस शिशु की रक्षा कर रहे हैं। मानो वो देवत्व पनप रहा है। इसीलिए हमारे यहाँ वह जो देवत्व है उसी अमृतम् ब्रह्माः वह अमृत को प्रदान कर रहा है। माता अपने में बसा रही

है–वह वसुन्धरा है। और जब माता के गर्भ से वही शिशु, मेरे प्यारे! देखो इस संसार सागर में आता है, माता के गर्भ से पृथक् हो जाता है और माता के गर्भस्थल में बेटा! पूर्णत्व रचना हो जाती है। बहत्तर करोड़ बहत्तर लाख दस हजार दो सौ दो नाड़ियों का निर्माण करता रहता है।

मेरी भोली माता को कोई ज्ञान नहीं है, कौन निर्माण कर रहा है, कौन निर्माणवेत्ता है। मेरे प्यारे! देखो, कहीं हृदय का निर्माण हो रहा है, कहीं मानो देखो बुद्धि का निर्माण हो रहा है। बुद्धि एक नहीं होती, अनन्य हैं। जैसे हमारे यहाँ बुद्धि है वह साधारणत्व कहलाती है जो संसार को दृष्टिपात कर करती रहती है। परन्तु देखो बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञा कहलाती है। ये चार प्रकार की मानो देखो **ये मन की वृत्तियाँ** मानी गयी हैं जिसे बुद्धि के रूप में वर्णन किया गया है। आचार्यों ने बेटा! बुद्धि को कहीं सुमिता कहा है, कहीं बुद्धि को मेरे प्यारे! रेणुका कहा है। इसके नाना प्रकार के भेदन माने गए हैं और ये नाना भेदनों वाली जो मानो बुद्धियाँ हैं इसी के ऊपर मानव बेटा! परम्परागतों से ही अन्वेषण करता रहा है अथवा अनुसन्धान करता रहा है।

आओ मुनिवरों! देखो मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा तो तुम्हें देने नहीं आया हूँ। केवल परिचय देना हमारा कर्तव्य है। मुनिवरों! देखो, यही जब माता के गर्भ से पृथक् होकर संसार में आता है तो ये पृथ्वी माता की गोद में आ जाता है। ये पृथ्वी नाना प्रकार के मानो व्यञ्जनों को देने वाली है। ये पृथ्वी नाना प्रकार के खाद्य और खनिज पदार्थों को प्रदान करती रहती है। मेरे प्यारे! देखो, कृषक इसे दुहने लगता है और वैज्ञानिक जब इसके गर्भ में प्रवेश करता है तो विज्ञानवेत्ता बेटा! देखो कहीं मानो स्वर्ण की धातु को जानने के लिए तत्पर हो जाता है। कहीं मेरे प्यारे! देखो, इस माता के गर्भस्थल में स्वर्ण के परमाणुओं का आदान-प्रदान हो रहा है। कहीं मेरे पुत्रों! इस पृथ्वी के गर्भ में जल शक्तिशाली बनाया जा रहा है, सूर्य की किरणों का उसमें व्यवधान हो जाता है। तो मेरे प्यारे! वही जल है जो वाहनों में

शुद्धिकरण हो करके वही मुनिवरों! देखो वाहनों में क्रिया देने वाला है। हे मेरी प्यारी माता वसुन्धरा! तुझे वेद वसुन्धरा कहता है। हे पृथ्वी! तू वसुन्धरा है। तू हमें अपने में बसा रही है। हमें मानो जीवन प्रदान कर रही है। ये नाना प्रकार का खाद्य और खनिज तेरे से ही, तेरे गर्भ से उत्पन्न हो रहा है। मेरे पुत्रों! देखो, जब वैज्ञानिकजन इसके गर्भ में प्रवेश करते हैं, पृथ्वी माता के गर्भ में प्रवेश करते हैं तो नाना प्रकार का धातु पिपाद मानव के समीप आता है और वो नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण करते रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो अग्नि को जानते रहते हैं। **अग्नम् ब्रह्मणा वृतम्।** मेरे प्यारे! वही अग्नि है जो नाना प्रकार की धातुओं को पृथ्वी के गर्भ में तपायमान करती है, वही तो तपती रहती है। तो मुनिवरों! देखो, हमारे ऋषि-मुनियों ने जब इस संसार को जानने के लिए तत्पर रहे, तो मुनिवरों! देखो इसके विज्ञान को जानने लगे।

महर्षि भारद्वाज मुनि की यज्ञशाला

मेरे प्यारे! मुझे वो काल स्मरण आता रहता है जब मुनिवरों! देखो महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ नाना ब्रह्मचारी अध्ययन करते रहते थे और नाना प्रकार के ज्ञान और विज्ञान को जानते रहते थे। मेरे पुत्रों! देखो मुझे स्मरण आता रहता है जब महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज, मेरे पुत्रों! देखो, अपने आसन पर अपने विद्यालय में विद्यमान थे। तो महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ नाना ब्रह्मचारी अध्ययन करते रहते थे और वे ब्रह्मचारियों को ही अध्ययन कराते रहते थे क्या इस संसार को जानना चाहिए और इस संसार में कितना विज्ञान है। मानो प्रभु की कैसी अनुपमता है उसको जानने का प्रयास करो। मेरे प्यारे! देखो, नाना ब्रह्मचारी, जैसे ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी कवन्धि, ब्रह्मचारी यज्ञदत्ता और ब्रह्मचारी रोहिणी कृतिका, महर्षि पणपेतु, ब्रह्मचारिणी शबरी और भी नाना ब्रह्मचारी अध्ययन करते रहते थे। मेरे पुत्रों! देखो इस अध्ययनशाला में वो विज्ञान के नाना प्रकार के तथ्यों में रमण कर जाते। भारद्वाज मुनि महाराज ने बेटा! सबसे प्रथम अपने यहाँ अपने आश्रम में एक यज्ञशाला का निर्माण

किया था। जिस यज्ञशाला को मेरे प्यारे! देखो, वैज्ञानिकजन उस पर अनुसन्धान भी करते रहे। मुझे स्मरण आता रहता है मेरे प्यारे! देखो, **जब भी उनके यहाँ कोई अतिथि आता**, उसी काल में मुनिवरों! देखो अतिथि के द्वारा आश्रम में याग होता यज्ञशाला में और उसके ऊपर अनुसन्धान होता रहता। तो महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने उस यज्ञशाला को मानो ऐसा निर्माणित किया था बेटा! ऐसे यन्त्रों का निर्माण किया, क्या मुनिवरों! देखो जो यज्ञशाला में याग कर रहे थे–उन यज्ञशालाओं में देखो होता, अध्वर्यु, उद्गाता और ब्रह्मा इत्यादि यजमान होतागण और यज्ञशाला का जितना आकार बना हुआ था, उतने आकार वाला एक रथ, उन्हें मानो देखो यन्त्रों में दृष्टिपात आता रहा और उन यन्त्रों को मानो देखो, अमृतम् ब्रह्माः, वे चित्र उसमें दृष्टिपात आते रहते थे यन्त्रों में।

महायाग

मेरे पुत्रों! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है, गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज और भी नाना ऋषिवर, मेरे पुत्रों! एक समय महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम में पहुँचे और भारद्वाज मुनि महाराज ने उनका स्वागत किया। क्योंकि हमारे यहाँ ये जो नाना प्रकार के यागों का वर्णन है, ये परम्परागतों से ही बड़ा विचित्र माना गया है। मानो देखो पञ्च यागों को हमारे यहाँ महायाग के रूप में वर्णन किया गया है। जैसे बेटा! देखो, हमारे यहाँ सबसे प्रथम ब्रह्मयाग का वर्णन है। ब्रह्म का चिन्तन करना, ब्रह्म की आभा में निहित रहना। मेरे प्यारे! देखो देवयाग करना, देवताओं की पूजा करना है। मैं आज पूजा के सम्बन्ध में कोई विचार नहीं दूँगा। केवल इतना ही सङ्केत हमें देना है, क्या पूजा का अभिप्राय है, प्रत्येक देवता के द्वारा जो गुण हैं, चाहे वो जड़ है, चाहे वो चैतन्य है उन गुणों को अपने में धारण करने का नाम उनकी पूजा मानी गयी है। मेरे पुत्रों! यह विवेचना मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन की है। आज मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नहीं, केवल देखो, देवता का अर्थ है, क्या उनके गुणों को अपने में धारण करना और सुगन्ध

करना और याग करना, वेद मन्त्रों के उद्घोष के द्वारा। मेरे पुत्रों! वो देवयाग कहलाता है। उसके पश्चात् अब अतिथि याग है। वह कोई भी अतिथि हमारे आश्रम में मानो गृह में किसी भी काल में गृह में प्रवेश करे तो उसको तृप्त करना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो द्वितीय बलि वैश्व यागों का वर्णन है। तो मानो यह पञ्च महायागों का वर्णन हमारे यहाँ भूत याग के सहित पञ्च यागों का वर्णन बेटा! इसको महायाग कहा गया है। याग का अभिप्राय ये है क्या **जितने भी शुभकर्म हैं, वे सर्वत्र वास्तव में याग माने गए हैं।** आज मैं याग की विस्तृत विवेचना नहीं कर पाऊँगा।

माता मदालसा का याग

मेरे प्यारे! मुझे याग के सम्बन्ध में एक वार्त्ता स्मरण आ रही है। जब माता मदालसा के गर्भस्थल में देखो अन्तर्हृदय में मानो गर्भ में शिशु का प्रवेश होता था तो माता बेटा! अपने गर्भ की आत्मा से वार्त्ता प्रकट करती रही। मेरे पुत्रों! मैं तुम्हें बड़ी विचित्र वार्त्ता प्रकट कर रहा हूँ। जो वेद का मन्त्र भी इस सम्बन्ध में कुछ कह रहा है। मेरे प्यारे! देखो, माता के गर्भस्थल में जब हम जैसे शिशु विद्यमान हों और माता ये चाहती है कि मेरा गर्भाशय संसार में उज्ज्वल बन जाए, पवित्र बन जाए तो बेटा! जैसे माता के गर्भस्थल में जब आत्मा का प्रवेश, शिशु का प्रवेश हो जाता उस समय वो गर्भ की आत्मा से वार्त्ता प्रगट करती और कैसे करती बेटा! देखो प्राण और अपान को मानो, दोनों को एक सूत्र में लाकर के और मुनिवरों! देखो उदान से उसका समन्वय करती हुई, मेरे प्यारे! देखो, आत्मा से वार्त्ता प्रकट करती रही हैं मेरी प्यारी माताएँ। और माता ने कहा **सम्भूति ब्रह्माः सम्ब्रव्हे वृतम् देवत्वाम् हे शिशुम् ब्रव्हा कृतम्।** बेटा! वेद का वाक्य ये क्या कह रहा है। माता कहती है, हे बाल्य! तू मेरे गर्भस्थल में शिशु जो वास कर रहा है। तू जो मेरे गर्भस्थल में भी आया है तो तुझे ब्रह्मवेत्ता बनना है और ब्रह्मनिष्ठ बन करके मानो देखो इस संसार के मान अपमान में तुझे परणित नहीं होना है। तुझे परमपिता परमात्मा के अन्तर्हृदय में ही प्रवेश करना है। तो माता

जिस समय ये उपदेश देती रहती और विवेचना गर्भस्थल में करती रहती उसे संस्कारों को परिपक्व वह बेटा! देखो माता एक याग कर रही है। वो याग है बेटा! आज मैं याग की विवेचना तुम्हें विस्तृत नहीं, केवल ये, क्या जितना भी सुकर्म है, इन पञ्च यागों में बेटा! जितने सुकर्म हैं, वह सब इनके गर्भस्थल में प्रवेश हो जाते। मेरे प्यारे! जो इनको जान लेता है वो वास्तव में प्रियतम को प्राप्त हो जाता है।

महर्षि भारद्वाज मुनि आश्रम में ऋषियों का प्रवेश

आओ मेरे प्यारे! मैं दूरी न चला जाऊँ, विचार केवल ये कि महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ बेटा! यज्ञशाला का जो निर्माण हुआ वह चौबीस कोणों की यज्ञशाला थी। वो चौबीस कोणों की यज्ञशाला में जो याग करता बेटा! वो धन्यता को प्राप्त होता रहा है। मेरे प्यारे! देखो, गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज और देखो उनके नाना ऋषिवर जैसे महर्षि वैशम्पायन, ब्रह्मचारी व्रतकेतु, मेरे प्यारे! देवात्म् धनम्, देखो गाड़ीवृताः और मुनिवरों! देखो, जैसे महर्षि प्रह्वाण, महर्षि शिलक, महर्षि दालभ्य, महर्षि रेणुकेतु और महर्षि विभाण्डक और महर्षि वृतवाहक ऋषि महाराज, मेरे प्यारे! देखो, नाना ऋषिवर वे गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज के आश्रम में विद्यमान थे। उन्होंने उनसे कोई प्रश्न किया। उन्होंने कहा, चलो आज तो महर्षि भारद्वाज मुनि की विज्ञानशाला को दृष्टिपात करके आएँगे। मेरे प्यारे! उन्होंने वहाँ से गमन किया और भ्रमण करते हुए मुनिवरों! वे गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज की अध्यक्षता वाला समाज, भारद्वाज मुनि आश्रम में उन्होंने प्रवेश किया। भारद्वाज मुनि ने बेटा! उनका अतिथि किया। ब्रह्मचारी सुकेता और कवन्धि से कहा, क्या, ऋषियों का स्वागत करो। उनको बेटा! जैसा उनकी योग्यता थी उसके अनुसार उन्होंने आसन दिया। अपने-अपने आसन पर विद्यमान हो गए। उन्होंने बेटा! उनका अतिथि किया और अतिथि करने के पश्चात् उन्होंने नतमस्तक हो करके कहा, कहो भगवन्! मेरे सुयोग्य क्रिया अमृतम् उद्गीत गाइये। उन्होंने कहा, हे भगवन्! हमारी कोई ऐसी जिज्ञासा या

प्रश्नावृति नहीं है। हम तो केवल कुछ जानने के लिए आए हैं। उन्होंने कहा, प्रभु! क्या जानना चाहते हो?

शब्द का नृत्य

उन्होंने कहा, हे ऋषिवर! हम इस जिज्ञासा में लगे हुए हैं, वेद मन्त्रों में यह आता है, क्या मानव के शब्दों का मानो देखो नृत्य होता रहता है और वह द्यौ लोक में प्रवेश होते रहते हैं। मानो हमें यह जिज्ञासा बनी। हम ये चर्चा ही कर रहे थे। मानो हम आपसे प्रश्न तो नहीं करना चाहते हैं क्योंकि हम तो जिज्ञासु हैं और जिज्ञासा ले करके आए हैं। उन्होंने कहा, प्रभु! जो उच्चारण करोगे, वह जो योग्यता है उससे, पृथाबहे मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने कहा सम्भव प्रहे। महर्षि भारद्वाज मुनि बोले कि महाराज, मेरे आश्रम का एक नियम बना हुआ है, कुछ समय से, कि मैंने एक यज्ञशाला का निर्माण किया है और जो आता है अतिथि, मेरे यहाँ सबसे प्रथम याग करता है। और वो याग में परणित हो करके मानो उसके पश्चात् उनकी जिज्ञासाओं का निवारण होता रहता है, जितना जानते हैं। मानो विशेष नहीं, जितना भी जानते हैं, उतना निवारण कर पाते हैं। मेरे प्यारे! देखो, वे बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने देखो, ऋषि मुनियों में, कोई उनमें से ब्रह्मा बना, कोई उद्गाता बना, कोई अध्वर्यु बना, कोई यजमान बना और होताजन बनकर के और पुरोहित बनकर के बेटा! उस यज्ञशाला में याग का प्रारम्भ किया। जब वे याग प्रारम्भ करने लगे तो ब्रह्मचारी सुकेता ने और कवन्धि ने बेटा! उसमें यन्त्रों को निर्धारित कर दिया। जब मेरे प्यारे! देखो, यन्त्रस्तम् उसमें विद्यमान हो गए–जैसे ही वो उद्गाता, अध्वर्यु मानो उद्गीत गाने लगे और साकल्य अग्नि होत्र करने लगे तो साकल्य जैसे उसमें प्रदान किया, नाना प्रकार का देखो हुत करने लगे तो मेरे पुत्रों! जैसै स्वाहा उच्चारण करते थे, उनके चित्र, शब्दों और शब्दों के चित्र बेटा! देखो यन्त्रशाला में दृष्टिपात आने लगे। उन्होंने कहा, भारद्वाज मुनि बोले, हे ऋषिवर! ये तुम्हारे चित्र बन करके मानो द्यौलोक को प्रवेश कर रहे हैं, द्यौलोक को गमन कर रहे हैं। मेरे प्यारे! देखो

उन्होंने कहा द्यौवम् भूतम् ब्रह्माः, द्यौलोक को ये प्राप्त हो रहे हैं। ये दृष्टिपात करो।

मेरे प्यारे! देखो, **तीन प्रकार की शब्दों की श्रेणी होती है**। एक मानो देखो भूः और भुवः , स्वः। मेरे पुत्रों! जो स्वः वाला शब्द है वो महान् पवित्र होता है और वह शब्द जितना भी शुद्ध और पवित्र होगा और निराभिमानी होगा, मानो जितना वो सात्विक वातावरण से भी उपरामता को प्राप्त होगा, वो द्यौलोक में प्रवेश हो जाएगा। और द्यौ की आभा में रत्त हो जाएगा। परन्तु एक शब्द वह है जो रजोगुण से सना हुआ शब्द है, वह मेरे प्यारे! भुव लोक में ओतप्रोत हो जाता है। और जो मनिवरों! तमोगुण, रजोगुण से मिश्रित होता है, वह मुनिवरों! देखो भूलोक में गमन करता है। मेरे प्यारे! देखो, आज मैं इसके ऊपर तुम्हें कोई विज्ञान विशेषता प्रगट करने नहीं आया हूँ। विचार केवल ये, क्या मुनिवरों! देखो जो सात्विक शब्द होते हैं वो द्यौलोक में जाते हैं। इसीलिए मानव के लिए यह कहा है कि तू हृदय को ऊर्ध्वा बना करके शब्दों के ऊपर उद्गीत गा, अन्यथा यही शब्द है जो अग्नि प्रदीप्त कर देता है। यही शब्द है जो द्यौ लोक में मानो द्यौ में प्रवेश हो जाता है। मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि ने इस प्रकार जब वर्णन कराया, उन्होंने कहा तुम याग करते रहो। और तुम अपने शब्दों के साथ में चित्रों को दृष्टिपात करते रहो। वे द्यौ लोक में जा रहे हैं। द्यौवम् भूतम् ब्रह्माः क्रतम्। ये द्यौ में ही मानो देखो चित्र भी रहता है। इसी में शब्द रहता है और वह मुनिवरों! देखो उसी में क्रियाकलाप रहता है, वह विद्यमान हो जाता है। तो आओ मेरे पुत्रों! देखो जब ऋषियों ने इस प्रकार विज्ञानशाला में यन्त्रों को दृष्टिपात किया तो वे बड़े प्रसन्न हुए और वे बोले कि धन्य है प्रभु! विज्ञानाता भूतम् ब्रव्हे, तुम्हें धन्य है भगवन्।

मेरे पुत्रों! देखो उन्होंने याग के माध्यम से अपने प्रश्नों को, अपनी जिज्ञासा को उन्होंने पूर्ण किया और उन्होंने कहा प्रभु, मेरी जिज्ञासा पूर्ण हो गयी है। तो मुनिवरों! देखो महर्षि भारद्वाज इत्यादि ब्रह्मणे। वह बड़े प्रसन्नता में परणित हो गए। गाड़ीवान रेवक ने कहा, धन्य है प्रभु!

रक्त के बिन्दु में मानव का दर्शन

मेरे पुत्रों! भारद्वाज की विज्ञानशाला में एक यन्त्र का और निर्माण हुआ था। बेटा! एक वेद मन्त्र वो गान रूप में गाते रहते थे और वेद का मन्त्र ये कहता, **यस्सुतम् ब्रह्मेः चित्रो रथम् ब्रहा, क्रतम् देवत्वाम् मामाम् ब्रहे वर्णस्सुताः।** वेद का मन्त्र ये कहता रहता था, क्या माता के गर्भस्थल में एक बिन्दु है और बिन्दु में ही शिशु रहता है और मानो शिशु रूप में वह रहकर के उसी से बाल्य का निर्माण होता है। प्रभु निर्माण करता रहता है। मानो देखो हम, ऐसा अपने में कि हम भी यन्त्र, उस मानो देखो उसका आकार, रक्तम् भूतम् ब्रव्हे। मेरे प्यारे! देखो उन्होंने एक यन्त्र का निर्माण किया था उस समय। बहुत पुरातनकाल की वार्त्ता बेटा! तुम्हें प्रगट करा रहा हूँ। भारद्वाज मुनि के यहाँ एक यन्त्र निर्माण हुआ था। मेरे प्यारे! देखो, एक रक्त का बिन्दु, उस यन्त्र में प्रवेश कर दिया जाए तो मुनिवरों! जिस मानव का रक्त का बिन्दु, उसी का चित्र दृष्टिपात आता रहता था। मेरे प्यारे! देखो, विज्ञान अपनी प्रतिभा में बड़ा विचित्र बनकर के रहा है। मुझे बहुत सा काल, बेटा! हमें स्मरण आता रहता है। मुनिवरों! ऋषि मुनियों के मस्तिष्कों में बेटा! प्रज्ञावी में कितना महान्, कितनी महानता विद्यमान रही है। विचार आता रहता है। मेरे प्यारे! क्या उनके यहाँ एक यन्त्र चित्रावली का निर्माण हुआ था बेटा! मेरे प्यारे! देखो भारद्वाज मुनि महाराज जब चित्रावली में ले गए तो उस यन्त्र में ये विशेषता कि एक रक्त का बिन्दु है, उस रक्त के बिन्दु से, जिस मानव का रक्त का बिन्दु है उसी का चित्र उस यन्त्र में दृष्टिपात आ जाता था।

मेरे प्यारे! देखो महर्षि सामकेतु, दद्दड गोत्रीय एक समय महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम में पधारे। भारद्वाज मुनि ये वर्णन करा रहे हैं ऋषियों से, क्या, जब सोमकेतु हमारे आश्रम में विराजे, तो उन्होंने कहा प्रभु मैं ये चाहता हूँ क्या मैं अपने कुछ पूर्वजों का दर्शन करना चाहता हूँ। उन्होंने कहा, हमने ब्राहा भारद्वाज बोले, क्या कहीं तुम्हें रक्त का बिन्दु, तुम्हें कहीं प्राप्त हो जाए अपने पूर्वजों का, तो मैं तुम्हें दर्शन करा सकता हूँ। मेरे प्यारे!

देखो, जब वे अपने आश्रम में पहुँचे तो उनके पिता, महापिता, मानो देखो उनके कहीं छठे महापिता मानो देखो उनके सँग्रहालय में पहुँचे। अपने पूर्वजों के सँग्रहालय थे, उनमें एक वस्त्र पर एक मानो छठे महापिता का एक बिन्दु था। एक रक्त का बिन्दु उस वस्त्र पर था। मेरे पुत्रों! देखो उसे लाकर के और उन्होंने भारद्वाज मुनि को कहा, प्रभु! मुझे ये प्राप्त हुआ है। इनको बेटा! एक सौ पचासी वर्ष जिनके शरीर को पूर्ण हो गया था, निधन हो गया था। मेरे पुत्रों! देखो उस समय ब्रह्मणे, यन्त्रों में उसी रक्त के बिन्दु से उसी अपने उनके छठे महापिता का बेटा! उनका दर्शन हो गया।

मेरे प्यारे! देखो, भारद्वाज मुनि ने कहा, क्या हे भगवन्, मैं तुम्हें ये दृष्टिपात कराऊँगा, तुम अपना-अपना एक रक्त का बिन्दु दो। और बिन्दु से तुम्हारा ही दर्शन यन्त्रों में दृष्टिपात आने लगेगा। मेरे प्यारे! देखो, विज्ञान अपनी आभा में परम्परागतों से बेटा! नृत्य करता रहा है। और ऋषि मुनियों के मस्तिष्कों में ये विज्ञान मानो नृतिका बन करके रहा। आज मैं विज्ञान के युग में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ। केवल तुम्हें ये परिचय देना चाहता हूँ कि हमारे यहाँ सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर के ही और मुनिवरों! देखो ये क्रियाकलाप और देखो अन्वेषण का चलता रहता है। प्रत्येक वेद मन्त्र के ऊपर अध्ययन होता रहा है और उस अध्ययन में मानो जो विज्ञान है, वह अपने में बड़ा सार्थक बनकर के रहा है।

महर्षि भारद्वाज मुनि की प्रेरणा का स्रोत

मेरे पुत्रों! देखो भारद्वाज और गाड़ीवान रेवक आदि ऋषिवर सब विद्यमान हो गए। उन्होंने कहा, हे भारद्वाज, तुम्हारा जो ये विज्ञान है ये बड़ा अनुपम मुझे दृष्टिपात आया। हमारा आत्मा तो बड़ा प्रसन्न हो गया है। हम तो कहीं वेद मन्त्रों में इनका अध्ययन करते रहे और क्या शब्द की इतनी गति है। शब्द ऐसे गमन करता है। परन्तु आज जो हम दृष्टिपात कर रहे हैं, हमारा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न हो रहा है। उन्होंने कहा, धन्यम् ब्रव्हे, उन्होंने एक वाक्य कहा, क्या भगवन्, हम ये एक वाक्य जानना चाहते हैं

ऋषिवर! क्या तुम्हारा जो गोत्र है वो भारद्वाज है, और भारद्वाज गोत्रों में बड़े वंशलज हुए हैं। मानो तुम्हारे गोत्र में नाना देखो वंशावली चली आ रही है। तुम्हारे गोत्रों का निकास मानो नाना ऋषियों से हुआ है। भारद्वाज गोत्रों का जो निकास हुआ है वो दृदृढ़ गोत्रों से हुआ है। और मानो, अमृतम् ब्रहे क्रतम् देवत्वाम्। तुम्हारे गोत्रों का जो निर्माण हुआ है भारद्वाज का, वो मानो देखो हरितत गोत्रों से तुम्हारा निकास हुआ है और हरितत गोत्रों का निकास, वायु गोत्र से हुआ है और वायु गोत्रों में मानो देखो लाखो वंश चले गए। और इसी प्रकार हरितत गोत्र में भी लाखों वंश चले गए। और तुम्हारे मानो देखो वायु गोत्रों का जो निकास हुआ, वो ब्रह्मा के पुत्र सोमवृतिका से तुम्हारा ये वंश चला है। और जितने ये वंशलज हुए हैं, इनमें सब मानो ब्रह्मवेत्ताम् होते चले आए हैं और कोई ब्रह्मवेत्ताम् ब्रह्मेः, ब्रह्म का चिन्तन करते हुए उनके ऊपर अन्वेषण करते हुए, परन्तु ये जो विज्ञान की प्रतिभा का जन्म हुआ है, ये जो तुम्हारे अन्तर्हृदय में इस प्रकार की जो भावना जागरुक हुई है कि मैं विज्ञानवेत्ता बनूँ, वैज्ञानिक बन करके मानो अपनी आभा में परणित हो जाऊँ, मेरे प्यारे! देखो, ये प्रेरणा तुम्हें कहाँ से प्राप्त हुई? तो मुनिवरों! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि बोले, क्या इसमें सबसे प्रथम तो मानो देखो शायद मेरी माता है। माता ने मुझे ये प्रेरणा देई। उन्होंने कहा कैसे? हमें वर्णन कराइये भगवन्! मेरे प्यारे! भारद्वाज मुनि बोले कि जब मैं, मेरी अवस्था तीन वर्ष चार दिवस की आयु थी। एक समय माता-पिता प्रातःकालीन ब्रह्मयाग कर रहे थे। और ब्रह्म का चिन्तन करते हुए क्योंकि गृह जब भी स्वर्ग बनते हैं, भारद्वाज कहते हैं जब भी स्वर्ग बनते हैं तो माता-पिता को प्रातःकालीन ब्रह्म का चिन्तन करना चाहिए। और **ब्रह्म का चिन्तन जितना किया जाएगा, उतना गृह का परमाणुवाद पवित्र बनेगा।** और उनके गृह में मानो वास करने वाले बाल्य-बालिका, वे सदैव मानो देखो उन गुणों को अपनाने वाले बनेंगे, गृह स्वर्ग बन जाएगा। इसीलिए अमृतम् ब्रह्माः, ये ब्रह्म का चिन्तन होना चाहिये। पति-पत्नी अपने आसन पर विद्यमान हैं। दोनों चर्चा कर रहे हैं और उद्गीत गा रहे हैं कि हमें, ब्रह्म

कैसा है, ब्रह्म इस संसार का नियन्ता है, निर्माण करने वाला है। हमारे शरीर को कैसा निर्माणित किया है। मानो देखो इस प्रकार के विज्ञान की चर्चा माता-पिता करते हैं, ज्ञान की और ब्रह्म प्रतिभा की, तो बाल्य-बालिका उस गृह में बेटा! पवित्र बन जाते हैं।

मेरे प्यारे! मैं आज तुम्हें विशेषता में नहीं ले जाऊँगा। केवल विचार-विनिमय ये आज दूरी नहीं जाना चाहता हूँ। मेरे पुत्रों! देखो भारद्वाज मुनि बोले, क्या मेरे पिता का नाम रेवणी भारद्वाज, रेवणी भारद्वाज मुनि महाराज ब्रह्म का चिन्तन करने के पश्चात् ये निश्चय हुआ, क्या अब चलो, देवयाग करेंगे। और देवयाग के पश्चात् उन्होंने निश्चय किया, आज ब्रह्मयाग (पितरयाग) करेंगे। उन्होंने अपने पिता, महापिता, अथाहम् ब्रह्मेः, पितर याग के लिए बेटा! वो परणित हो गए। पितर याग में बेटा! देखो, पितर पिता, महापिता, पड़पिता, जो भी संसार में थे आचार्यजन उन्हें सबको निमन्त्रित किया और निमन्त्रित करने के पश्चात् मानो देखो ब्रव्हे क्रतम् दिव्य प्रवाहा विद्यमान हो गए। अमृताम् देखो निमन्त्रण दिए गए वे सब निमन्त्रण के कथना उन्हें भोज कराया। नाना प्रकार के पदार्थों को पान कराया। और उन्होंने बारी-बारी सब ऋषि मुनियों ने मेरे पितर को सुन्दर आशीर्वाद के रूप में दो-दो शब्दों की विवेचना करना, क्योंकि वे तपस्वी थे और **तपस्या के दो-दो शब्द जो होते हैं वे बड़े महान् होते हैं।** वे कहते थे, पितर! आपको मैंने तुम्हें भोज कराया है। मैं आपका मानो देखो पितरयाग में परणित हो गया हूँ। हे पितर! मुझे कोई न कोई उपदेश दीजिए, जिससे मेरा कल्याण हो जाए। तो मेरे प्यारे! देखो पितरजनों का ये सदैव एक कृत रहा है। परम्परागतों में एक नृत होता रहा है क्या अपने मुखारबिन्दु से कुछ न कुछ कोई उद्गीत गाना। वे कहते कि तुम्हारे जीवन में सदैव यौगिकता बनी रहे। और वो यौगिकता और महान् बने। मानो तुम यागों में परणित होते रहो। इस प्रकार देखो, उनके महापितर ने ये वाक्य कहा। और उन्होंने कहा कि तुम अतिथियों का पूजन पितरों का याग करते रहो। क्योंकि **पितरों का याग करने से तुम्हारे हृदय में नम्रता आती है। और जितनी भी नम्रता होती**

है उतना ही मानव का कल्याण होता है। जितना मानव में अभिमान होता है—अभिमान उस काल में होता है जब वो अज्ञान में परणित हो जाता है और उस परमपिता परमात्मा को अपने से दूरी कर देता है, पितरों को दूरी कर देता है तो उसमें अज्ञान, अभिमान आता है। अभिमान से देखो अभिमानम् ब्रव्हे, और अभिमान से अज्ञान आ जाता है। अज्ञान के पश्चात् अन्धकार आ जाता है। अन्धकार के पश्चात् देखो उसकी मृत्यु हो जाती है।

मेरे पुत्रों! देखो पितर ये शिक्षा दे करके, वहाँ से उन्होंने प्रस्थान किया। मानो देखो इतने में मैं भी बाल्यकाल था, क्रीड़ा करते हुए अपने पितर के आँगन में प्रवेश कर गया। उन्होंने कहा देवी से, मेरी प्यारी माता से कहा हे दिव्या! तुमने बाल्य को भोज कराया अथवा नहीं। तो सबसे प्रथम जब मेरे से ये प्रश्न किया तो मैंने एक वाक्य मिथ्या उच्चारण कर दिया, क्या मैंने भोज नहीं किया। उन्होंने मेरी प्यारी माता शकुन्तका से कहा, हे शकुन्तका! तुमने बाल्य को भोज नहीं कराया है? उस समय माता ने कहा, प्रभु मैंने इसे भोज्य करा दिया है। ये मिथ्या उच्चारण कर रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो उस समय पितर क्या कहते हैं। पितर ने कहा, हे बाल्य, हमारे वंशलज में कोई मिथ्यावादी अब तक नहीं हुआ, तुम कैसे मिथ्यावादी बन गए? हे बाल्य! हमारा गृह, जिस गृह में बाल्य देखो मिथ्यावादी होते हैं, वो गृह अशुद्ध हो जाता है। उस गृह का परमाणुवाद देखो अपवित्र हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, मैं उस समय शान्त रह गया और माता-पिता के वे शब्द मेरे अन्तर्हृदय पर अंकित होने लगे। माता ने ये कहा, हे बाल्य! तूने मेरे गर्भस्थल से जन्म लिया है, ये मेरा गर्भाशय दूषित हो गया है। मेरे पुत्रों! देखो भारद्वाज कहते हैं, क्या मैं उसी प्रेरणा को ले करके मानो देखो मेरे पितर ने जब मुझे तत्वमुनि के यहाँ विद्यालय में प्रवेश किया तो मेरा अध्ययन करने का परमाणु विद्या को जानने के लिए मैं तत्पर हो गया। और मैंने वेद में उसी विद्या का अध्ययन किया जिस अध्ययन के लिए मैं परिणतम् ब्रहा, अपने में परमाणुवाद को जानने में तत्पर हो गया। परिणाम ये हुआ कि मैं उसी आभा में, मानो देखो माता ने जब मुझे अमृताम् उपदेश दिया, मेरा

उपनयन आचार्य के कुल में हुआ। मैं परमाणु विद्या को अध्ययन करने लगा। मानो देखो मेरे जो पितर थे आचार्यजन। एक समय आचार्यजन ने मुझे परमाणु विद्या में दृष्टिपात कराया तो मानो मैं अपने में महान् बन गया। मानो देखो मैं ब्रह्मचारियों की जब परीक्षा आता, परीक्षाफल में मानो कहीं किसी से प्रथम आता, किसी में द्वितीय आता। मैं अपनी विद्या में पारायण बन गया। मानो मेरे पितर के यहाँ एक विज्ञानशाला थी। उस विज्ञानशाला में सबसे प्रथम उस काल में महर्षि तत्वमुनि के यहाँ एक यन्त्र का निर्माण किया गया था। जिस यन्त्र में देखो अन्तरिक्ष की यात्रा करते थे। मानो देखो एक समय मुझे अमृताम् ब्रह्मणे, भारद्वाज कहते हैं, क्या मैं, एक सुमितर, देखो सुमिता ब्रह्मचारी थे, महर्षि तत्वेश्वर ऋषि महाराज के पुत्र। मानो दोनों देखो यन्त्र में विद्यमान होकर के और अन्तरिक्ष के लिए आचार्य ने हमें देखो उड़ाने में प्रतप्त किया। विचार आया, भारद्वाज कहते हैं क्या मैं देखो वो यन्त्र यहाँ से आचार्य के कुल से जब यन्त्र गमन करता है तो यन्त्र मानो देखो भ्रमण करते हुए सबसे प्रथम यन्त्र चन्द्रमा में पहुँचा। और चन्द्रमा से उड़ाने उड़ी तो वो बुध में चला गया। और बुध से जब उड़ाने उड़ीं तो शुक्र में चला गया। शुक्र से उड़ाने उड़ीं तो वो मङ्गल में चला गया। मङ्गल से उड़ाने उड़ीं तो मृतिका मण्डल में चला गया। मृतिका मण्डल से उड़ाने उड़ीं तो वह वशिष्ट मण्डल में चला गया। वशिष्ट मण्डल से उड़ान उड़ी तो अरुन्धति में चला गया। और अरुन्धति से उड़ान उड़ी तो मौमकेतु मण्डल में प्रवेश कर गया। मौमकेतु मण्डल से उड़ान उड़ी तो कृतिका मण्डल में प्रवेश कर गया। कृतिका मण्डल से उड़ान उड़ी तो विश्वेषकेतु मण्डल में प्रवेश कर गया। विश्वेषकेतु मण्डल से उड़ाने उड़ी तो वह वसांगति मण्डल में प्रवेश कर गया। वसांगति मण्डल से उड़ाने उड़ता हुआ वह मृचिका मण्डल में प्रवेश कर गया। और मृचिका से उड़ाने उड़ी तो वह स्वाति में चला गया। और स्वाति से उड़ाने उड़ी तो मुनिवरों! देखो वह पुष्प नक्षत्र में प्रवेश कर गया। हे प्रभु! मुझे स्मरण है भली-भाँति, वह बहत्तर लोकों का भ्रमण करके और वह यान देखो तत्वमुनि के आश्रम में प्रवेश कर गया।

मेरे प्यारे! देखो, भारद्वाज ने कहा, प्रभु, **ये जो मुझे प्रेरणा प्राप्त हुई है, ये मेरी माता की प्रेरणा है, पितर का आदेश है।** पिता की ही प्रेरणा है। आचार्यों की प्रेरणा से मानो देखो मैं, अमृताम् भूतम् ब्रह्मणे और मुझे तत्वमुनि महाराज की प्रेरणा से मैंने मानो देखो उस परमाणु विद्या के ऊपर अध्ययन प्रारम्भ किया। मैं इस प्रकृति के स्वरूप में प्रवेश कर गया हूँ। मैंने नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण किया। मेरे प्यारे! देखो महर्षि भारद्वाज मुनि ने कहा, प्रभु, मैं इन्हीं में मानो संलग्न रहता हूँ। मुझे यह प्रेरणा, मुझे माता ने देई है। क्योंकि **माता संसार में सबसे महान् प्रेरक होती है।** वो प्रेरणा देने वाली होती है। इसीलिए जो माता ने मुझे जो प्रेरणा दी है उसी प्रेरणा के आधार पर मैं अपने क्रियाकलाप में परणित हूँ। आचार्य मुझे प्राप्त हो जाते हैं मनस्तत्त्व के आधार पर।

मेरे प्यारे! देखो विचार विनिमय क्या, हमारे इन वाक्यों को मैं दूरी न ले जाऊँ। विचार तो मेरे प्यारे! आते ही रहते हैं। परन्तु विचार-विनिमय ये कि हमारा वेद मन्त्र क्या कह रहा है, वेद मन्त्र कहता है **वसुन्धरम् ब्रह्माः क्रतम! देवत्वाम् ब्रह्मेः!** हे माता वसुन्धरा! तू हमारा कल्याण करने वाली है। हे माता तुझे वेद ने सुमिता कहा है, कहीं रेणु कहा है, कहीं मानो देखो धेनु कहा है। नाना प्रकार के रूपों में तेरा वर्णन आता रहा है। तू प्राण और अपान को एकाग्र करती हुई तू गर्भ की आत्मा से वार्त्ता प्रगट करती रहती है। ये चर्चाएँ तो बेटा! हम सदैव गान गाते रहते हैं, वेद मन्त्रों में इस प्रकार की विद्याओं का वर्णन आता रहता है। आज का विचार क्या। मेरे प्यारे! देखो, भारद्वाज मुनि आश्रम में प्रायः देखो वृतम् होता रहा और ये चित्रावलियाँ बनती रहीं हैं। विज्ञान अपनी सीमा पर बड़ा विचित्र बनकर के रहा है। ये है बेटा! आज का वाक्।

आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्राय ये, क्या जितना भी ये जड़ जगत और चैतन्य जगत है मानो उसमें परमपिता परमात्मा, दोनों प्रकार के जगत में विद्यमान हैं, उसी में निहित हैं। वही मेरे प्यारे! देखो वसुन्धरा

बन करके इस ब्रह्माण्ड को अपने में धारण किए रहता है। प्रत्येक परमाणु अपनी-अपनी आभा में गतिवान रहा है। ये है बेटा! आज का वाक्। अब मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चायें कल प्रगट कर पाऊँगा। आज का विचार अब समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन।

ओ३म् देवाः आपा रथम् माऽम् गायन्त्वा रथम्।
ओ३म् जनिता रेविरनाहा आपा रेवम् आभ्याम्।।

महर्षि महानन्द मुनि जी—अच्छा भगवन्।
पूज्यपाद-गुरुदेव—आनन्दित रहो।

दिनाँक : 7 जनवरी, 1990
समय : रात्रि 8 बजे
स्थान : श्री निरंकार सिंह त्यागी
ग्राम महादों, मेरठ

सदस्यता

पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की ज्ञान गङ्गा का मासिक पत्रिका ''यौगिक प्रवचन'' में, वैदिक अनुसन्धान समिति द्वारा प्रकाशन किया जाता है और जिस के आजीवन सदस्य बनने के लिए शुल्क दिनाँक 1 जनवरी 2019 से 1500 रु. और वार्षिक सदस्य बनने के लिए शुल्क 150 रु. होगा, जिसको आप समिति के पते के साथ-साथ निम्न किसी एक पते पर भी डाक द्वारा भेजकर सदस्य बन सकते हैं—

1. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, प्रकाशन मन्त्री
ए-59, पञ्चशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017, फोन : 011-41030481
2. सुश्री नीरू अबरोल, कोषाध्यक्ष
K-3, लाजपत नगर,-III, नई दिल्ली-110024 फोन : 011-41721294
3. श्री जितेन्द्र चौधरी, प्रचार मन्त्री
ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मोबाइल : 9811707343

॥ ओ३म् ॥

महर्षि सम्भूति ऋषि द्वारा तप की विवेचना

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गए हैं और वे सर्वज्ञ हैं। इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महती और उसकी अनन्तता के ऊपर सदैव विचार-विनिमय करते रहते हैं। क्योंकि वह ऐसा अनन्तमयी है, वे इस संसार का नियमन कर रहे हैं अथवा इसको गतिवान् बना रहे हैं जिससे सर्वत्र ब्रह्माण्ड अपने में गतिवान् दृष्टिपात आता रहता है। एक-दूसरे में ये संसार प्रायः दृष्टिपात आता रहता है। एक-दूसरे में ये पिरोया हुआ सा ही दृष्टिपात आता है। जैसे मानो हमारे यहाँ ये पृथ्वी गुरुत्व में पिरोयी हुई रहती है और गुरुत्व तेजोमयी में पिरोया हुआ है और तेजोमयी अग्नि में पिरोया हुआ है। और ये अग्नि वायु में पिराई हुई है। और ये जो वायु है ये पञ्चम् ब्रव्हा कृत्य है। ये सर्वत्र मानो एक-दूसरे में पिरोयी हुई, एक विचित्र सी माला दृष्टिपात आती रहती है। जिस माला को दार्शनिकजन मानो अपने में धारण करते रहे हैं और विचारवेत्ता इस विचार में तल्लीन रहते हैं कि हमारा मानवीयत्व सर्वत्रता में हमें दृष्टिपात आता रहे। क्योंकि प्रत्येक मानव परम्परागतों से ही नाना प्रकार की मालाओं को धारण करता रहा है। जैसे मेरी प्यारी माता अपने गर्भस्थल में मानो एक शिशुओं की माला को अपने में धारण करती रहती है। और मानो प्रथम तो वह

माला के स्वरूप में विद्यमान रहे, उसी के पश्चात् वो पिण्ड के रूप में दृष्टिपात आते रहते हैं। और वे जहाँ पिण्ड रूप में बनें, उनके आकारों में ये सर्वत्रता हमें दृष्टिपात आती रहती है।

बेटा! इसी प्रकार मानो देखो ममता में जो शब्द है, वह उस शिशु के साथ में पिरोया हुआ है। यदि शिशु नहीं होता तो माता का कोई महत्त्व नहीं होता। तो इसीलिए वह भी एक-दूसरे में माला के सदृश ही दृष्टिपात आता रहता है। मानो देखो, इसी प्रकार ये ब्रह्माण्ड है और ये ब्रह्माण्ड उस शिशु में पिरोया हुआ है। यदि ब्रह्माण्ड का और मानव का यदि कोई समन्वय नहीं होता तो एक-दूसरे का कोई सम्बन्ध अथवा एक-दूसरे का अपना कोई महत्त्व नहीं माना गया है। क्योंकि **मानव जब भी जानकारी करता है, वह अपने को मानो अपने में ही पिरोना प्रारम्भ कर देता है।** जैसे एक मानव विज्ञानवेत्ता बनना चाहता है तो वह विज्ञानवेत्ता, मुनिवरों! देखो विज्ञान में अपने को विज्ञान में दृष्टिपात करता है। और वो जब अपने को विज्ञान में दृष्टिपात करता है, तो वही मानव देखो बाह्य जगत में, आन्तरिक जगत और बाह्य जगत का, दोनों का समन्वय करता हुआ, मेरे पुत्रों! देखो, उस माला का माला से समन्वय कर देता है तो वह विज्ञानवेत्ता की प्रतिभा में निहित हो जाता है।

आनन्द की अनुभूति

आओ मेरे पुत्रों! मैं इस सम्बन्ध में विचार नहीं दूँगा तुम्हें, केवल विचार-विनिमय इतना ही है कि हम एक-दूसरे में पिरोये हुए दृष्टिपात आते हैं। इसीलिए सबको धारण करने वाला वह परमपिता परमात्मा है जो हमारा प्रत्येक वेदमन्त्र बेटा! हमें अपनी आभा में परणित कर रहा है। प्रत्येक वेदमन्त्र में नाना प्रकार के भाव प्रायः हमारे समीप आते रहते हैं। ऋषि-मुनि, बेटा! अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके एक-एक शब्द के ऊपर अन्वेषण करते रहे। एक-एक वाक्य के ऊपर अपने में रचना को दृष्टिपात करते रहे हैं जिससे मुनिवरों! देखो, बाह्य और आन्तरिक जगत दोनों का समन्वय होकर के और दोनों के इस रूप को जानकर के हम संसार सागर से

पार हो जाएँ। और हमारा जो आत्मिक मन्तव्य है उससे हम बाह्य और आन्तरिक दोनों को अपने में समावेश करके हम प्रभु के समीप जा सकते हैं। मेरे प्यारे! देखो, परम्परागतों से ऋषि-मुनि, प्रायः अपने में प्रत्येक ऋषि-मुनि ही नहीं, प्रत्येक मानव ये परम्परागतों से चाहता रहा है और ये विचार बनते रहे हैं कि हम अपने में अपने को जानते हुए इस सागर से पार हो जाएँ। हम, प्रभु जो हमारा रचयिता है, निर्माण करने वाला है, गतिवान् है, गति दे रहा है, हम उस प्रभु के समीप चलें और एक आनन्द की अनुभूति को हम प्राप्त करते रहें। मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहाँ प्रत्येक मानव अपने में मुनिवरों! देखो अपनेपन का ही भान करता और विचारता रहा है।

महर्षि सम्भूति ऋषि महाराज का आश्रम

मेरे प्यारे! आओ आज मैं तुम्हें एक ऋषि के आसन पर ले जाना चाहता हूँ। जहाँ ऋषि-मुनि, मेरे पुत्रों! देखो अपने बाल्य, बाल्य बालिकाओं को मुनिवरों! देखो ब्रह्मविद्या और वह शिक्षा देते रहे हैं जिस शिक्षा के स्वरूप में मैंने तुम्हें कई कालों में वर्णन भी कराया है। आज भी मुझे स्मरण आ रहा है। मानो देखो, उस वाक्य को मैं आज तुम्हें पुनः से प्रकट करना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है। एक समय महर्षि सम्भूति ऋषि महाराज के यहाँ, मेरे प्यारे! देखो ब्रह्मचारी अध्ययन करते रहते थे। सम्भूति ऋषि महाराज बड़े विज्ञानवेत्ता और दर्शनों के मर्म को जानने वाले थे। परन्तु वे नाना प्रकार के विज्ञान में भी अपने को ले जाते थे और विज्ञान की चर्चाएँ प्रगट करते रहते थे। मेरे पुत्रों! देखो, एक समय वे ब्रह्मचारियों और ब्रह्मचारिणीयों को शिक्षा दे रहे थे। मेरे प्यारे! उनका मन्तव्य था कि मैं ब्रह्मचारियों को शिक्षा दूँ और वे ब्रह्मचारी भी क्या, उनके आश्रम में कन्याएँ अध्ययन करती रहती थीं। मेरे पुत्रों! देखो वह अमृताम् ब्रह्मणे क्रतम्, वह अपने में मानो देखो यह उपदेश देते रहते थे। हे दिव्याम्!, हे पुत्रो! हर्षणम्, तुम मानो अपने में महान् बनने का प्रयास करो जिससे तुम्हारे गर्भस्थलों से महानता की प्रतिभा का जन्म हो जाए।

तप की विवेचना

मेरे प्यारे! देखो एक समय उनके आश्रम में कन्या अध्ययन करती थी। उन्होंने कहा, हे भगवन्, हम कैसे, आपनें जो अभी-अभी कहा, यह कैसे हो सकता है? उन्होंने कहा कि जब संसार में देवियाँ, पुत्रियाँ अथवा तप जाती हैं तो तपने से ही देखो, दिव्या बनती हैं। और जब तक तपायमान नहीं होतीं, तप नहीं होता तब तक दिव्या शब्द उत्पन्न नहीं होता। क्योंकि देवता बनता ही जब है जब कि वो तपायमान हो लेता है। और तप किसे कहते हैं इसके ऊपर विचार-विनिमय करने लगे। मदालसा ने, कन्या ने कहा, प्रभु! ये तप क्या है जिसके ऊपर आप इतना बल देते हैं। इतनी उद्गीतता गाते रहते हैं। उन्होंने कहा, हे पुत्री, देखो तप उसे कहते हैं। तप कहते हैं **ब्रह्मनचत प्रव्हा वृति देवत्वाम्**। मानो देखो जो ब्रह्मचर्य में रत्त हो जाता है वह तपस्वी कहलाता है। उन्होंने कहा भगवन्! ब्रह्मचर्य क्या वस्तु है जिससे इतनी उसकी रक्षम् व्रव्हा मानो देखो तपों को प्राप्त हो जाते हैं।

ऋषि कहता है, हे देवी! हे पुत्री! अमृताम् भूतम् ब्रह्मणे व्रतम् देवाम् अम्ब्रहा। हे पुत्री, मानो देखो, **ब्रह्मचर्य उसे कहते हैं जिससे हम परमात्मा की प्रतिभा को जान सकें।** यदि ब्रह्मचर्य की आभा हमारे अन्तरात्मा अथवा अन्तर्हृदयों में नहीं होगी तो हम अपने को ऊर्ध्वा में नहीं ले जा सकते और न परमपिता परमात्मा के जगत को ही जान सकते हैं। उन्होंने कहा, भगवन् मैं आगे जानना चाहती हूँ ये क्या है इसके गर्भ में? उन्होंने कहा ब्रह्मचरिष्यम् ब ब्रहाः। देखो, ब्रह्मचर्य के कई प्रकार के स्वरूप माने गए हैं। एक स्वरूप वह कहलाता है जो बाल्यकाल में शिक्षार्थी शिक्षा अध्ययन कर रहा है। परन्तु आचार्य के समीप विद्यमान हो कर के मानो देखो, नम्रता से उसका पालन कर रहा है। नम्रता से इन्द्रियों को आचार्यो को प्रदान करता हुआ वह कहता है चक्षुर्मे शुन्धामि, प्राणंमे शुन्धामि, श्रोत्रम्मे शुन्धामि वह सर्वत्र इन्द्रियों को आचार्यो को प्रदान कर देता है। इन्द्रियों में ही दोष आते हैं। उन दोषों को समाप्त करने के लिए। परन्तु जब वह विद्या में रचित हो जाता है तो

विद्या में रचित होने के पश्चात् उसका वो ब्रह्मचारी मानो देखो जिस विद्या का वो अध्ययन कर रहा है, उस विद्या के ऊपर वो मानो देखो जो शब्द आचार्य ने उसे आचरण में लाने के लिए प्रयास किया अथवा उद्गीत गाया है वह उनके ऊपर आचरणीय बन जाता है। उसके पश्चात् जो उस विद्या के गर्भ में विद्यमान जो तथ्य है, उस तथ्य को जानने के लिए वह मानो देखो अपने में ब्रह्मचरिष्यामि बनता है। ब्रह्मचरिष्यामि कैसे बनता है जो एक श्वास गतिवान हो रहा है, वह गतिवान होता हुआ श्वास, मेरे प्यारे! देखो, उससे वो एक-एक श्वास को मानो देखो, मनका बना करके और जो ब्रह्मसूत्र में पिरोने वाला है, बेटा! वह मानो जब ब्रह्मसूत्र में पिरोना प्रारम्भ कर देता है, और पिरोने लगता है तो बेटा! इन्द्रियों का अपना अस्तित्व अपने में शान्त हो जाता है। और इन्द्रियों का जब अस्तित्व शान्त हो गया और ब्रह्मसूत्र में प्रत्येक प्राण और मन और विचार उसमें परणित हो गया तो बेटा! वो महान् तपस्वी कहलाता है।

मेरे प्यारे! देखो, उसी में प्राण का अभ्यास करता है। मन, प्राण और विचार, मेरे प्यारे! देखो, क्योंकि **सर्वत्र प्राण से पिरोया हुआ ये जगत है।** और मन प्रकृति का सूक्ष्मतम् तन्तु कहलाता है। मेरे पुत्रों! देखो, जब ये योगेश्वर अथवा साधक इन्द्रियों के विषयों को इनमें समर्पित कर देता है तो मेरे प्यारे! देखो, जिस इन्द्रिय के विषय को वो जानना चाहता है उसी में मन, प्राण और विचार को लाते ही मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्माण्ड को अपने में दृष्टिपात करने लगता है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा, हे पुत्री! तुम्हारे विचार में आ गया होगा। **ब्रह्मचारी वह है जो मानो प्रत्येक श्वास को मनका बना कर के ब्रह्मसूत्र में पिरोता है और वह ज्ञान और विज्ञान का ज्ञाता बन जाता है।**

माताओं को तपने की प्रेरणा

देखो, जैसे उन्होंने शिक्षा दी कि वेद में मन्त्र आता है। वेद कहता है **ममत्वाम् ब्रह्मणे तपस्यम् ब्रव्हाः।** वेद मन्त्र कहता है कि माता को तपस्वी बनना चाहिए। और माता कैसे तपस्वी बने ये विचार आता रहता है। तो

मदालसा ये अपनी जिज्ञासा प्रगट करने लगी। प्रश्न करने लगी, प्रभु! मैं जानना चाहती हूँ क्या मानो देखो ये मङ्गलम् ब्रव्हे व्रतम् पिताहा। आपने जो कहा है कि तपस्वी ममम् ब्रव्हे, उन्होंने कहा, हाँ पुत्री, मैंने यही कहा है क्या बेटियों को तपस्वी बनना चाहिए ममतामयी को धारण करते हुए। मेरे प्यारे! देखो वो कैसे। क्या जब मुनिवरों! देखो, बाल्यकाल में कन्या जिस समय वेदों का अध्ययन करना प्रारम्भ कर देती है तो वेदमन्त्रों का अध्ययन करते हुए अध्ययन की प्रतिक्रिया में वो अपने में रत्त हो जाती है। मानो देखो वही तो ब्रह्मवर्चस्वतम् ब्रह्माः। ऐसा वेद का मन्त्र कहता है–**प्राणम् उद्गम् ब्रव्हे, प्राणम् प्राणस्सुति शुद्धम प्राणम् ब्रहे क्रतम् देवत्वाम् लोकाः।** मेरे प्यारे! देखो, ये कहती है कि माता को बाल्यकाल में ही देखो प्राण का अभ्यास करना चाहिए और वह जब प्राण का अभ्यास करने लगती है तो प्राण, अपान, उदान, समान और व्यान में परणित हो जाती है। तो मानो देखो, माता प्राण और अपान को जब मिलाना प्रारम्भ कर देती है तो देखो वह अपनी वृतियों को जानने लगती है और जब उसको उदान समीप ले जाती है तो गर्भ के अव्ययों को जानने लगती है।

मेरे प्यारे! देखो, माता मदालसा के जीवन की आभा तो प्रायः मुझे स्मरण आती रहती है परन्तु वह कन्या बाल्यकाल में शिक्षा का अध्ययन कर रही है। आचार्य ने कहा, हे पुत्री! हे दिव्याम्!, मानो देखो जब प्राणायाम करती है तो माता अपने गर्भ में जो शिशु पनप रहा है अथवा जो गर्भस्थल में है, उस शिशु से वह माता, प्राण और अपान को दोनों को मिलान करती हुई उस गर्भ की आत्मा से, शिशु से वार्त्ता प्रगट करती है। और वह कहती है कतमोऽसी कत् प्रमाणम् ब्रहे। वह कहती है, हे बाल्यम् ब्रहे तू कतमोऽसी, तू कहाँ से आया, कौन है। ये वार्त्ता प्रगट करती है, परन्तु देखो उसके अव्यवों को जानने लगी। मेरे प्यारे! यह विद्या वैदिक साहित्य में प्रायः हमें प्राप्त होती रही है। आचार्यजनों ने मानो देखो उसको जनाने का प्रयास किया। इसको उद्गीत रूप में गाया और दर्शनों में इसकी प्रायः मीमांसा आती रहती है।

मेरे प्यारे! देखो, मुझे माता मदालसा का जीवन प्रायः स्मरण आता रहता है। वह अपने देखो, जब उन्होंने विद्यालय को त्यागने के पश्चात् गृह में प्रवेश किया तो उन्होंने देखो अपने गर्भ की आत्मा से वार्त्ता प्रगट करती रहती थी। मेरे प्यारे! देखो, माता, यदि वो शक्तिशाली बनना चाहती है, तपस्या में परणित होना चाहती है तो वेद के मन्त्र को ले करके–वेदमन्त्र यह कहता है क्या माता ऐसी शिक्षक है, क्या वो बाल्य को अपने गर्भस्थल में बालक को ब्रह्मवेत्ता बना देती है। वह ब्रह्मनिष्ठ बना देती है। मेरे प्यारे! वो मन, प्राण, विचार को लेकर के ही जब वह प्राणायाम को प्राण को अपान में और अपान को व्यान में इस प्रकार का अभ्यास करती है तो माता, मेरे प्यारे! वो तपस्वी कहलाती है। **हमारे यहाँ तप कहते हैं, इन्द्रियों पर सँयम करना, मन विचार को एक बिन्दु पर ले आना।** मेरे पुत्रों! वही हमारे यहाँ एकम् अमृतम् तपश्चय ब्रहा। वही तपस्या कही जाती है। तो माता मदालसा का जीवन पुत्रों मुझे स्मरण आता रहता है। माता मदालसा जब बाल्यकाल में इस प्रकार का अध्ययन करती रही। वह खग दर्शनों का अध्ययन करते हुए मुनिवरों! देखो अपने में रत्त रही। क्योंकि **मस्तिष्क और मन, मस्तिष्क, मन और विचार, मेरे प्यारे! देखो एक सूत्र में हो जाते हैं तो मन स्थिर हो जाता है** और मन जब स्थिर हो जाता है तो स्थिरता में संसार की प्रतिभा निहित रहती है।

राजा का सङ्कल्प

मेरे पुत्रों! देखो, मुझे स्मरण है माता मदालसा का जीवन। आज भी उस जीवन को विस्तृत रूप में तो नहीं, परन्तु तुम्हें ये उद्गीत गाने के लिए अवश्य आया हूँ। मैंने कई काल में तुम्हें यह वाकय प्रकट करते हुए कहा था, क्या माता मदालसा का जीवन प्रायः विद्यालय में स्मरणवृति रहता था। मेरे प्यारे! जब वह अध्ययन करती रहती। तो मुनिवरों! देखो, भगवान् मनु वंश में एक राजा हुए हैं। मानो देखो, वह राजा उनको राज दे करके वह तो सन्यास को प्राप्त हो गए। वह तो परमपिता परमात्मा को अग्नेय बन करके

समर्पित करना चाहते थे। मेरे प्यारे! देखो, राजा का अभी संस्कार नहीं हुआ था। वह जेठे पुत्र को राज देकर के वह भयङ्कर वन में अपने राष्ट्र में भ्रमण कर रहे थे। तो मुनिवरों! देखो, उस समय जब ऋषि के आश्रम में पहुँचे तो मदालसा का दर्शन हो गया। वह वेदों का अध्ययन करने वाली अपने में अध्ययन की प्रतिक्रियाओं में लगी हुई थी। मेरे पुत्रों! देखो, राजा ने दृष्टिपात किया क्या यदि ये कन्या मेरे गृह में सुशोभित हो जाए तो मेरा राष्ट्र मानो पवित्रतम् को प्राप्त हो सकता है। राजा ने अपने मन में ये सङ्कल्प कर लिया, क्या ये कन्या तो अयोध्या में जानी चाहिए। क्योंकि ये बड़ी सुसज्जित है और सुशील है। मानो देखो वेद के मर्म को जानने वाली है।

मेरे प्यारे! देखो वह जब यह निश्चय कर लिया तो वह ऋषि के द्वार पर पहुँचे। और ऋषि से कहा, हे देवत्वाम्! हे ऋषिवर! मेरी इच्छा ऐसी है, क्या आप मुझे तो जानते ही हैं। उन्होंने कहा, हाँ प्रभु! क्या, मेरी इच्छा यह है कि जो कन्या तुम्हारे आश्रम में अध्ययन करती है, ये मदालसा नामक ब्रहे, इसका संस्कार होना चाहिए। क्योंकि हमारा जो ये अयोध्या राष्ट्र है, इसीलिए इसका निर्माण भी भगवान् मनु ने किया है। और हम मनु वंशज भी हैं। हमारी इच्छा ऐसी है कि हमारे यहाँ ये परम्परा उत्तमता की बनी रहे तो बड़ी विचित्र है। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा, ऋषिवर स्वाति अमृते, ऋषि ने कहा कि भगवन्, ये तो मदालसा से ही प्राप्त करो।

माता मदालसा की प्रतिज्ञाएँ

वह मुनिवरों! देखो, उनके यहाँ वो कक्ष में अध्ययन कर रही थी तो राजा उसके समीप पहुँचे। राजा से कहा, कहो राजन्! कैसे शान्त मुद्रा में विद्यमान हो? उन्होंने कहा, देवी, मैं कुछ इच्छा प्रकट करना चाहता हूँ। उन्होंने कहा, उच्चारण कीजिए। उन्होंने कहा, देवी, मेरी इच्छा ऐसी है कि मैं मनु वंश का राजा हूँ। और मनु वंश में देखो ये, हमारे पूर्वजों ने इस अयोध्या का निर्माण किया। और अयोध्या में मानो मेरी इच्छा ऐसी है कि उत्तम से

उत्तम सन्तानों का जन्म होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, उस समय मदालसा ने कहा कि आप अपना मन्तव्य प्रगट कीजिए। उन्होंने कहा कि मैं यह चाहता हूँ कि तुम हमारी अयोध्या में मानो देखो हमारी अयोध्या का सौभाग्य जागरूक हो जाएगा। मदालसा ने कहा, राजन्, मैं तुम्हारी अयोध्या में, नहीं जा सकूँगी। उन्होंने कहा, कारण? उन्होंने कहा कि मैं खग दर्शनों का अध्ययन करती हूँ और मैंने कल्प और निरूक्त में बहुत सी विद्याओं को मैंने अध्ययन किया है। परन्तु मैं गृह आश्रम के ऊपर मेरा बहुत ही अध्ययन रहा है। मैं आचार्य से अपनी जिज्ञासा प्रगट करती रहती हूँ। हे परमदेव! मैं इसीलिए नहीं जा सकती क्योंकि मैं सदैव अध्ययन करती हूँ। मैंने तीन प्रतिज्ञाएँ की हैं। वास्तव में तो दो ही हैं। परन्तु प्रथम प्रतिज्ञा मेरी यह है क्या मेरे गर्भ से उत्पन्न होने वाले बाल्य की मानो देखो पाँच वर्ष तक मेरी शिक्षा हो। और उस पाँच वर्ष में मेरे में कोई मध्य में बाधक नहीं बनना चाहिए। और जिस दिन मध्य में वो बाधक बनेगा उसी समय मैं गृह में प्रवेश नहीं करूँगी और मैं मानो देखो बारह वर्षम, बारह वर्ष के पश्चात् मैं स्वेच्छा से अपने शरीर को त्याग दूँगी । मेरे प्यारे! देखो, राजा ने कहा, देवी, मुझे ये स्वीकार है।

उन्होंने कहा, हृदय को प्रबल करो। क्योंकि ये हृदय, **ये हृदय ऐसा है, हृदय, मस्तिष्क दोनों अपने में मानो देखो चर्चा करते रहते हैं और विचार-विनिमय होता रहता है।** जब क्रिया वाहक रूप देना प्रारम्भ करोगे, उस समय मानो देखो जब तुम्हें प्रतीत होगा, ये क्या है? मेरे प्यारे! देखो, राजा ने कहा, नहीं दिव्याम्, मुझे स्वीकार है। मेरे प्यारे! देखो वह माता मदालसा अपने गुरु के, आचार्य के समीप पहुँची और आचार्य से कहा, प्रभु, ये राजा क्या उद्गीत गा रहे हैं। उन्होंने कहा, देवी जैसी तुम्हारी इच्छा हो। उन्होंने कहा, प्रभु, मैंने आपके लिए प्रतिज्ञा की हैं। मेरी प्रतिज्ञा यदि इन्होंने भङ्ग कर दी तो क्या होगा? उन्होंने कहा जो तुम्हारी प्रतिज्ञाबद्ध हो उसी में तुम तत्पर रहो। मेरे प्यारे! देखो उन्होंने कहा, तो मेरी ये प्रतिज्ञा है, क्या मैं,

कोई भी मेरी शिक्षा में बाधक नहीं बनना चाहिए। और जिस दिन बनेगा, मानो देखो, बाधक को अप्रति में वर्णमकृति में, मानो कृतिका कुल में उस समय मैं गृह में प्रवेश नहीं करूँगी। राजा ने बेटा! वो स्वीकार कर लिया और स्वीकार करके मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि से उन्होंने अनुमति लेई।

माता मदालसा को दीक्षाम् उपदेश

उन्होंने कहा, धन्य है प्रभु। आपकी अनुपम जो शिक्षा मुझे दीक्षाम् उपदेश दीजिए। प्रभु! मैं मानो देखो अपने गृह में प्रवेश कर रही हूँ। मैं गृह में प्रवेश करूँ, आपने मेरा संस्कार करने से पूर्व आप मुझे दीक्षाम् उपदेश दीजिए। मेरे प्यारे! देखो, माता मदालसा से ऋषि ने कहा, हे पुत्री! जिस विद्याालय में तुमने अध्ययन किया है और जिस विद्या को मैंने दर्शनों में और वेदमन्त्रों से मैंने उपार्जन करके इस विद्या को मैंने तुम्हें दिया है, इस विद्या का तुम्हें विचार-विनिमय करना है। और तुम्हें मानो देखो ब्रह्मवर्चोसी बनना है। क्योंकि मैंने पुरातन काल में ये उपदेश दिया था जब बाल्य काल था तुम्हारा क्या तुम्हें ब्रह्मवर्चोसी बनना है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि कहता है, **ब्रह्मवर्चोसी वह कहलाता है, जो ब्रह्म को अपने से दूरी नहीं करता है**। मानो देखो, गृह में तुम जा रही हो। और राजस्थली में तुम्हारा जाना होगा। परन्तु देखो, तुम्हें आलस और प्रमाद न आ जाए। यदि जो दिव्या को देखो, आलस और प्रमाद आ जाएगा, मानो देखो उस समय गृह का विनाश हो जाएगा, तुम्हारा गृह अशुद्धता में परणित हो जाएगा। क्योंकि तुम्हारी प्रवृति सन्तति है। तुम्हारी प्रवृति ही मानो देखो आगे आने वाला जो समाज है, उसकी धरोहर है तुम्हारे द्वारा। मेरे पुत्रों! देखो, माता मदालसा को दीक्षाम् उपदेश आचार्य ने देना प्रारम्भ किया। सबसे प्रथम ये दिया, क्या तुम गृह में देखो, तुम्हें आलस और प्रमाद नहीं आना चाहिए। ब्रह्मचर्य इतना सुरक्षित रहना चाहिए, मानो देखो, सन्तान को जन्म देने से देखो ब्रह्मचर्य की विनाशता नहीं होती। परन्तु देखो, उसमें संयम और धैर्य और तुम्हारा मनस्तत्त्व देखो सदैव प्राणसत्ता के साथ में बना रहना चाहिए।

मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा कि तुम्हारा ब्रह्मवर्चोसी बना रहना चाहिए। आलस और प्रमाद नहीं रहना चाहिए। और मानो देखो, जिस राष्ट्र को जा रही हो, इस राष्ट्र को तुम अपना मत स्वीकार करना। क्या ये राष्ट्र मेरा है। इदन्नमम् देखो, वेद का मन्त्र कहता है इदन्नमम्, क्योंकि ये मेरा नहीं है। ये हमारे मध्य में मानो देखो प्रभु की धरोहर है। समाज की धरोहर है और ये राष्ट्र की सम्पदा है। मानो देखो, इसमें प्रभु सबकी रक्षा करने वाला है। ये तुम्हें स्वीकार करना होगा। इसमें नम्रता रहनी चाहिए। मानो देखो, जब तुम्हारे हृदयों में इस प्रकार की नम्रता जभी बन सकेगी जब तुम मानो देखो इस धरोहर को परमात्मा की धरोहर स्वीकार करोगे। जब तक मानो देखो इस धरोहर को, द्रव्य को, राज्य को जब तक देखो मानव परमात्मा की धरोहर स्वीकार नहीं करता, तब तक मुनिवरों! देखो, उसमें निरभिमानता नहीं आ सकती। **निरभिमानी वही प्राणी बनता है जो इस अतुलित धरोहर को प्रभु की धरोहर स्वीकार करता है। समाज की धरोहर स्वीकार करता है।** हे पुत्री! तुम राष्ट्र में जा रही हो, तुम्हारा राष्ट्रीयत्व इस प्रकार बना रहना चाहिए।

मेरे प्यारे! उन्होंने कहा, सबसे प्रथम मेरा ये उपदेश है, मानो देखो, जो तुम्हें सन्तान को आगे जन्म देना है, उसमें तुम्हें याग करना है। और याग का अभिप्राय ये है, **माता का याग वह होता है**, जो गर्भस्थल में शिशु आने से ले करके और पाँच वर्ष तक मानो देखो उसको ब्रह्मवेत्ता बना देती है। उसको ब्रह्मनिष्ठ बना देती है और उसको त्याग और तपस्वी बना देती है। ये माता ही, मानो देखो माता कहलाती है और वो माता याग करके वो पुत्र याग करने वाली कहलाती है।

मेरे प्यारे! देखो ऋषि ने कहा, देवी, तुम गृह में प्रवेश हो रही हो। परन्तु देखो, तुम्हारा ये विचार रहना चाहिए। **मङ्गलम् ब्रह्मेः व्रतम् देवाः।** मेरे प्यारे! देखो, ऋषि के उद्गारों को दिव्या अपने में ग्रहण कर रही है। उन्होंने कहा प्रभु! और उच्चारण कीजिए मुझे तो परम आनन्द की अनुभुति

हो रही है प्रभु। हे भगवन्! मुझे दीक्षान्त उपदेश दीजिए। उन्होंने कहा, पुत्री, मैंने तुम्हें उपदेश दिया कि इस विज्ञान को तुमने पाया है उस विज्ञान को प्राण को अपान में, अपान को व्यान में और व्यान को समान में और समान को उदान में प्रवेश करते हुए तुम प्राण की सत्ता को जानो जिससे तुम अपने आन्तरिक जगत को अपने में दृष्टिपात कर सको।

मेरे प्यारे! देखो! ये विचार देते हुए मदालसा बड़ी प्रसन्न हुई। उन्होंने कहा, धन्य है प्रभु। आपके विचारों से मेरा अन्तरात्मा मानो गद्गद् हो रहा है। और मुझे दीक्षान्त उपदेश दीजिए। उन्होंने कहा, हे पुत्री! जिस गृह में तुम्हारा वास होने जा रहा है ये मनु वंश है। इस मनुवंश में इतनी त्याग और तपस्या में जीवन रहा है क्या इसमें, राजा अपने जेठे पुत्र को राज दे दे करके सब ऋषि होते चले आए हैं। ये परम्परा रही है। क्योंकि देखो, वहाँ एक मानवीय परम्परा रही है। राष्ट्रीय परम्परा तो गौण है परन्तु मानवीय परम्परा एक महान् विशिष्टा में परणित रही है। **मानवता सबसे प्रथम है, राष्ट्र उसके पश्चात् है।** क्योंकि राष्ट्रम् ब्रह्मे। देखो राष्ट्र तो एक वृति कहलाती है। परन्तु **मानव दर्शन जो है ये परमात्मा की सृष्टि से मिलान कराता है।** परमात्मा का आत्मचेतना आत्मा से मानो देखो परणित हो जाता है। उन्होंने कहा, ये उपदेश, मैं तुम्हें देने जा रहा हूँ। ये मेरा दीक्षान्त उपदेश है। और जिस भूमि पर तुमने अब तक अध्ययन किया है इसको अपने से दूरी नहीं करना है। मानो देखो, इस भूमि के प्रति तुम्हें अपने में सहानुभूति लाना है। समय-समय पर इस पर किसी प्रकार की क्षति हो जाए या इस पर कोई आक्रमण आ जाए तो ये तुम्हें मानो देखो इसकी रक्षा करना है। उसके ऊपर तुम्हें अपने को धारण करते हुए ऊर्ध्वा में गमन कराना है।

मेरे पुत्रों! उन्होंने कहा, हे दिव्या! तुम्हारा राष्ट्र, तुम्हारा मन मस्तिष्क यहीं पनपा है। इस मन मस्तिष्क और विचार को लेकर के तुम मानो देखो अपने कर्तव्य का पालन करना। क्योंकि **कर्तव्य जीवन है। कर्तव्य ही**

महानता में ले जाता है। और जो अधिकार होता है वो मानव को मृत्यु में पहुँचा देता है।

मेरे प्यारे! देखो, ये वाक्य उन्होंने बड़े महत्त्व, बल देकर के कहा, क्या जब कर्तव्य का पालन करोगे, जब कर्तव्य तुम्हारे समीप रहेगा कि ये मेरा कर्तव्य है। मेरे गर्भ में शिशु आया है, मुझे परमात्मा का चिन्तन करना है। प्राणायाम करना है। उदान और समान और विचार को मिलाते हुए मानो मुझे अन्तरात्मा से वार्त्ता प्रकट करनी है। तब वह कर्तव्य जब तुम करती चली जाओगी तो तुम्हारे गर्भ से ऐसे महापुरूषों का जन्म होगा, वह ब्रह्मवेत्ता बन करके माता के नामकरण को उज्ज्वल करते हैं।

मेरे प्यारे! ऋषि ने कहा, ये तो तुम्हारा कर्तव्य है। और मानो देखो, जो अधिकार है, अधिकार को पुकारते रहो क्या राष्ट्र मेरा अधिकार है। अरे! राष्ट्रीयता के कर्म करते चले जाओगे तो राष्ट्र प्राप्त हो जाएगा। परन्तु यदि राष्ट्रम् ब्रह्मेः, राष्ट्र को एक अधिकार समझ कर कि जान करके अधिकार देकर के ही तुम मानो देखो अपने में लगे रहोंगे। एक समय तुम्हारा मन मस्तिष्क देखो रक्त भरी क्रान्ति में परणित हो जाएगा।

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने ये अपना दीक्षान्त उपदेश दिया और ये कहा, क्या तुम कर्तव्य, योग्यता के लिए तुमने अध्ययन किया है, यौगिक बनो और यौगिक बन करके तुम्हारे कर्तव्य ही तुम्हें एक मानवीय कर्तव्य का रूप बना देगा। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने इस प्रकार दीक्षान्त अपना उपदेश देकर के ये कहा हे पुत्री! तुम मानो कर्तव्यवादी बनना राष्ट्र के प्रति, समाज के प्रति अपनी अन्तरात्मा की जो देखो आह्वान है, जो तुम्हारी अन्तरात्मा की जो अन्तः है, पुकार है अथवा उसको जब तुम स्वीकार करोंगे तो तुम आत्मवेत्ता बन करके इस संसार में अपने कर्तव्यवादी बनकर के तुम सागर से पार हो जाओंगे।

मेरे प्यारे! देखो माता मदालसा ने कन्या रूप में जब ये उपदेश आचार्य से श्रवण किया तो आचार्य के चरणों को स्पर्श करने लगीं। उन्होंने कहा, धन्य

है प्रभु और मुझे कोई उपदेश देना हो। उन्होंने कहा पुत्री! देखो बाल्याम् भूतम् ब्रह्मेः। पाँच वर्ष तक तुम्हें शिक्षा है, बाल्य को शिक्षार्थी बनाना है। और पाँच वर्ष के पश्चात् अपने अतिकाल को मानो उससे दूरी कर लो। वह दूसरा कर्तव्य देखो पिता का बन जाता है। पिता के संरक्षण में त्याग दो। और जब पिता के संरक्षण में, वो आचार्य के मानो कुल में जब प्रवेश हो जाता है तो उस समय मानो देखो तुम्हारा दायित्व समाप्त हो जाता है।

मेरे प्यारे! देखो ऋषि ने जब इस प्रकार का उपदेश दिया, माता मदालसा बड़ी प्रसन्न हो गयी। उन्होंने कहा, धन्य है प्रभु। उन्होंने कहा, हे पुत्री! यदि तुम्हें ममता आए तो प्रभु का चिन्तन कर लेना, क्योंकि प्रभु रचाता है और इससे दूरी रहता है। इसी प्रकार माता भी जन्म देती है परन्तु उसके अव्यवों से, मोह से दूरी रहना चाहिए। **प्रीति करनी चाहिए।** इस प्रकार मुनिवरों! देखो, आचार्य ने उपदेश दिया। आचार्य ने जब ये उपदेश दिया माता मदालसा ने ये सब स्वीकार किया। **उन्होंने अन्त में एक वाक्य कहा,** क्या जो भी जब भी तुम किसी भी काल में कोई भी सङ्कल्प करो, देखो आत्मा से जो सङ्कल्प किया जाएगा, वह सङ्कल्प तुम्हें देखो, इस सागर से पार ले जाएगा। यदि देखो तुम बाह्य कटुता में कोई सङ्कल्प यदि तुमने लिया है वो कटुता का सङ्कल्प तुम्हें कटु बना देगा। तुम्हारी मृत्यु हो जाएगी। और यदि आत्मा की पुकार है, आत्मा की पुकार से तुमने ये सङ्कल्प लिया है, कोई भी सङ्कल्प हो वह सङ्कल्प तुम्हें देखो सागर से पार ले जाएगा। वह सङ्कल्प तुम्हारी आत्मा का सङ्कल्प है। **आत्मा के भाव को कदापि तुम्हें नष्ट नहीं करना है।**

मेरे प्यारे! ये माता मदालसा को ये उपदेश ऋषि ने दिया। ऋषि के देते ही, देखो माता ने चरणों को कन्या भाव में देखो ऋषि के चरणों को स्पर्श किया। उन्होंने कहा, धन्य है प्रभु! आपको कोई और उपदेश देना हो तो मुझे प्रगट कीजिए। उन्होंने कहा, हे पुत्री! देखो अमृताम्, जो तुम्हारी परम्परा मनु वंश की बनी हुई है उससे दूरी नहीं होना है। मानो देखो, उन्होंने परम्परा बनायी है, ब्रह्मचर्य, गृह आश्रम में प्रवेश हो करके और जेठा पुत्र

जब मानो सुयोग्य बन जाए, राज्य देकर के तुम भयङ्कर वन में चले जाओ। तपस्वी रूप में अपने में ब्रह्मज्ञान का अध्ययन करो। जिस विद्या का तुमने अब तक अध्ययन किया है, वही तुम्हारे लिए सार्थक है। विद्यालयों को ऊँचा बनाना, **सन्यस्त में जाकर के प्रभु के समीप जाना और आनन्द की पगडण्डी को ग्रहण करने का नाम ही परमानन्द है।** कर्तव्य की प्रतिभा कहलाती है। मेरे पुत्रों! देखो, जब माता ने इन वाक्यों को श्रवण किया तो बेटा! चरणों में ओत-प्रोत हो गयीं और उसने ये कहा, हे प्रभु! मेरे मन की इच्छा तो ये चाहती नहीं, क्या मैं राष्ट्र में चली जाऊँ, मैं मानो गृह में प्रवेश हो जाऊँ। मेरी अन्तरात्मा तो यही कहती है प्रभु, मैं आपके चरणों में सदैव विद्या का अध्ययन करती रहूँ। ब्रह्मज्ञान में परणित होती रहूँ। क्योंकि विद्या की कोई मानो सीमा नहीं है। जैसे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं ऐसे परमपिता परमात्मा की ये विद्या भी एक मानवीय समाज में एक धरोहर है और एक उज्ज्वल है। मानो ये जो धरोहर है, ये बड़ी विचित्र कहलाती है। **परमात्मा की धरोहर आत्मा के समीप है और आत्मचिन्तन करना मानो देखो ये उसकी तपस्या कहलाती है।**

आओ मेरे पुत्रों! देखो वह ब्रह्मणम् ब्रव्हा वृतम् देवत्वाम्, **वेद का मन्त्र कहता है** कि देवता बनने के लिए तपस्या चाहिए। बेटा! तप किसे कहते है– मैंने तुम्हें कुछ सूक्ष्म सी तप की विवेचना की है। क्या वह तपस्वी ही कहलाता है जो बेटा! देखो माता बनकर के आत्मा से वार्त्ता प्रगट करने वाली हो। पितर बन करके वो राष्ट्र और समाज को अपना न जानकर के प्रभु की धरोहर स्वीकार करता हुआ व प्रभु का चिन्तन करता रहे। तो मुनिवरों! देखो, राजा के समीप न तो क्रान्ति आती है, उसका आत्मबल, उसका क्रियाकलाप इतना विचित्र रहता है कि प्रत्येक समाज उससे प्रसन्न रहता है।

ये है बेटा! आज का वाक्। अब मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चायें कल प्रगट करूँगा, इससे आगे की शेष चर्चाएँ। आज का विचार ये समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन।

ओ३म् देवाः आभ्याम् रथम् मनुः गायन्त्वाः।
ओ३म् ब्रह्म मनश्चमाः वाया रथम् आपाः।
ओ३म् यशश्चहम् ब्रह्मणाः।

महर्षि महानन्द मुनि जी–अच्छा भगवन्।
पूज्यपाद-गुरुदेव–आनन्दित रहो।

दिनाँक : 12 जनवरी, 1990
समय : रात्रि 8 बजे
स्थान : श्री हरि सिंह
महावीर एन्क्लेव पालम,
दिल्ली।

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेद मन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को निरन्तर प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है–

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.) PAN No. – AAAAV7866J
पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली
बैंक खाता नं. 0149000100229389, IFS Code - PUNB 0014900

शृङ्गीऋषि बेवसाईट

Website : www.shringirishi.in
Email : contact@shringirishi.in

॥ ओ३म् ॥

दो प्रकार का ज्ञान

दो प्रकार का ज्ञान हमारे यहाँ प्राणियों में प्रायः प्राप्त होता दृष्टिपात आता है। एक नैमेत्तिक होता है और एक स्वाभाविक होता है। जितना भी हमारा स्वाभाविक ज्ञान है वह प्रायः सभी प्राणियों में प्राप्त होता रहा है। जितने भी प्राणीमात्र हैं, चाहे वह पृथ्वी पर रहने वाले प्राणी हों, चाहे वे जल में गमन और समुद्रों में रमण करने वाले हों, चाहे वह अन्तरिक्ष में गमन करने वाले हो परन्तु उनका ज्ञान एक स्वाभाविक माना गया है। वे स्वभाव में अपने में उड़ानें उड़ते रहते हैं। परन्तु हमारे यहाँ एक ज्ञान नैमेत्तिक होता है जो हमें सम्पर्क से प्राप्त होता है। जैसे यह मानव का जीवन है तो इसे स्वाभाविक ज्ञान तो प्राप्त होता ही रहा है परन्तु इसमें नैमेत्तिक ज्ञान होने से यह सर्वश्रेष्ठ माना गया है। वास्तव में तो प्रायः ऐसा प्राप्त होता रहा है कि नैमेत्तिक ज्ञान प्रायः सर्वत्र प्राणियों में भी प्रायः प्राप्त होता रहा है सम्पर्क से, परन्तु मानव उसमें विशेष माना गया है। बाल्यकाल से ले करके जब माता के गर्भस्थल में शिशु प्रवेश होता है तो वहीं से नैमेत्तिक ज्ञान इसे प्रारम्भ हो जाता है। माता के विचारों में यदि महानता है तो वैसी तरङ्गें, वैसे परमाणुओं से सुगठित होने वाला हमारा शरीर, उसमें जो प्रवृत्तियाँ हैं वह उसी प्रकार सुगठित होती रहती हैं। गर्भ संस्कार से ले करके मानव अब यह संस्कार का उद्‌बुद्ध होता है। प्रत्येक मानव को यह विचारना है कि हमारे संस्कारों का समन्वय संस्कृति से रहता है **'सन सम ब्रहे क्रतम्'** मानो, **बिखरे हुए परमाणुओं को एकत्रित करना, बिखरी हुई प्रवृत्तियों को एकाग्र करना यह संस्कार कहे जाते हैं।**

पूज्यपाद-गरुदेव

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. यजमान कहते हैं इस आत्मा को ब्रह्मा कहते हैं उस परमात्मा को।
2. यह जो शरीर है यज्ञशाला रूपी वेदी है।
3. संसार में ऐसे समय में यदि यज्ञ होते रहें तो बड़े ही शुभ सङ्कल्प इस संसार के।
4. प्रभु की याचना कर प्रभु की सहायता पाते रहो।
5. बुद्धिमानों के आदर से धर्म और सदाचार संसार में आएगा।
6. बुद्धिमान तुम्हें सब कुछ दे करके तुम्हारे धर्म मर्यादा को ऊँचा बनाते हैं।
7. यह संसार तो नम्रता से आर्य बनेगा।
8. सँस्कृति को ऊँचा बनाने के लिए तुम्हें सदाचार और यज्ञों को अपनाना पड़ेगा।
9. यज्ञ ही हमारा राष्ट्र है। यज्ञ ही हमारी रक्षा करेगा।
10. आत्म का प्रकृति से सम्बन्ध है। प्रकृति से बनी ये इन्द्रियाँ है।
11. जो वस्तु प्रकृति और चैतन्य के मिलान से बनी है वह सदैव अधूरी रहती है।
12. जिस समय यह आत्मा उस प्रभु का अनुभव करता है उस समय यह वाणी भी उसमें कार्य करती है।
13. जब ऋतम्भरा से उस परमात्मा का मिलान हो जाता है उस समय यह आत्मा विस्तार वाला बन जाता है।
14. चित्र की वृत्तियों का निरोध ज्ञान के द्वारा कर सकते हैं।
15. वाणी पर वही शासन कर सकता है जो विद्या से ओत-प्रोत होता है। वाणी में विवेक होना चाहिए।
16. वह आहार तुम न करो जिससे तुम्हारे हृदय में तुम्हारी आत्मशक्ति न्यन बन जाए।
17. सरस्वती नाम वाणी का है और सरस्वती नाम विद्या का है।
18. भौतिक विज्ञान से राष्ट्र का निर्माण होता है। आध्यात्मिक विज्ञान से चरित्र का निर्माण होता है।

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

*1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	110.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	110.00
*3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	120.00
*4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	110.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	110.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	100.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	40.00
8.	आत्म-लोक	45.00
*9.	धर्म का मर्म	50.00
10.	शंका-निवारण	40.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व	50.00
12.	आत्मा व योग-साधना	40.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	150.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	150.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	140.00
17.	रामायण के रहस्य	45.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	50.00
19.	महाभारत के रहस्य	35.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	45.00
21.	रावण-इतिहास	65.00
22.	महाराजा-रघु का याग	35.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	40.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	40.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	45.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	40.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	45.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	50.00
29.	याग-मन्जूषा	45.00
30.	आत्म-दर्शन	35.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	40.00
32.	याग और तपस्या	70.00
33.	यागमयी-साधना	45.00
34.	यागमयी-सृष्टि	40.00
35.	याग-चयन	50.00
36.	दिव्य-रामकथा	150.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	50.00
38.	दिव्य-ज्ञान	45.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	140.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	45.00
41.	आत्म-उत्थान	45.00
*42.	तप का महत्त्व	50.00
43.	अध्यात्मवाद	45.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	45.00
45.	वैदिक-प्रभा	40.00
46.	प्रकाश की ओर	40.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	45.00
48.	वैदिक-विज्ञान	40.00
49.	धर्म से जीवन	40.00
50.	आत्मा का भोजन	45.00
51.	साधना	40.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	45.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	45.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	110.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	50.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	110.00
57.	माता मदालसा	60.00
*58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	110.00
*59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	110.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	110.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	110.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	110.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	110.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएँ	60.00
65.	प्रभु-दर्शन	60.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	110.00
*67.	समाज उत्थान का मार्ग	60.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	110.00
*69.	ब्रह्म की ओर	60.00
*70.	ईश्वर मिलन	60.00
*71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	110.00
*72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	110.00
*73.	नैतिक शिक्षा	60.00
*74.	यौगिक प्रवचन माला भाग-17	110.00
*75.	आत्मिक ज्ञान	60.00
*76.	यौगिक प्रवचन माला भाग-18	120.00
*77.	यज्ञ विज्ञान	100.00
	पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज एवम् कर्मभूमि लाक्षागृह	10.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध है–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत, (उ.प्र.)। मोबाइल नं 09719622950
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
3. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, डी-33 पंचशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
5. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
6. श्री अनिल त्यागी सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4165802
7. श्री आशीष त्यागी, सुपुत्र श्री सुशील त्यागी डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4202763
8. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
9. श्री शमीक त्यागी, 16ए, आलोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड़, (उ.प्र.)।
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
11. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110–मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
12. श्री पवन त्यागी सुपुत्र श्री राजाराम त्यागी, मौ. खड़खड़ियान, माता, ग्राम खरखौदा, जिला मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 7536097171
13. श्री प्रदीप त्यागी सुपुत्र श्री महेश त्यागी, रघुनिवास 138 सर्वोदय कालोनी, मेरठ रोड़, हापुड़ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9758330473
14. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे. पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
15. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09313530505
16. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
17. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

सु. कुमारी नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली – स्मृति–श्रीमति शान्ति अबरोल व श्री देवराज अबरोल	1001 रुपये
श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री ज्ञानेश द्विवेदी	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	1000 रुपये
श्री संजय उर्फ टीटू त्यागी सुपुत्र श्री ओमदत्त त्यागी, तलहटा	600 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	250 रुपये
श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल	201 रुपये
श्री कर्ण तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
श्रीमती रुचिका तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
श्री अरुण तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
श्रीमती सुखमणी तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
मास्टर कवन्धि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज दिल्ली	101 रुपये
कुमारी अञ्जलि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सात्विक त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये

मासिक सहयोग का आह्वान

सभी श्रद्धालु एवम् उदार दानदाताओं के सहयोग से समिति के प्रकाशन का कार्य निरन्तर ऊर्ध्वा गति को प्राप्त हो रहा है उसी सहयोग की गरिमा को सुदृढ़ रूप से चिरस्थायी बनाए रखने के लिए आपका अनुदान निरन्तर प्राप्त होता रहे ऐसी आप सभी से समिति विनम्र भाव से प्रार्थना करती है और नए मासिक सहयोगियों को भी अपनी आहुति इस जनकल्याण के कार्य में प्रदान करने की अपेक्षा करती है। **वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

आज पर्ययण समय में वेदों का गान गाते-गाते हमें ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे विधाता हमारे द्वारा कोई अमूल्य वस्तु प्रदान कर रहा हो। इसका क्या अभिप्राय है कि वेदों का गान गाते समय हृदय में आनन्द कहाँ से आ जाता है। वह कौन-सी अमूल्य निधि है जो हमें परमात्मा ने प्रदान की है? आज हम उस विधाता के बहुत बड़े ऋणी हैं जिस प्रकार मुनिवरो! प्रजा राजा की ऋणी होती है, क्यों होती है? कौन-सी प्रजा ऋणी होती है? मुनिवरो! जो प्रजा राजा के बनाए हुए नियमों के आधार से नहीं चलती, उसके आदर्शों का पालन नहीं करती। इसीलिए आज हम परमात्मा के ऋणी बने बैठे हैं। जो मानव परमात्मा के नियम का अच्छी प्रकार पालन नहीं करता, नाना प्रकार की अशुद्धि करता है, परमात्मा की नाना प्रकार की आलोचनाएँ करता है, वह मानव परमात्मा का महाऋणी है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

(पुष्प-3 – प्रवचन–दिनांक 9 दिसम्बर 1962)

वर्ष 48 : अंक : 569
फरवरी 2020

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R. No. DL (S)-01/3220/2018-2020
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT N.D.PS.O ON 10/11-2-2020
Published on 5th day of the same month